AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

बी०एड० प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षुओं के लिए संचार प्रौद्योगिकी का एक अध्ययन

डॉ चन्द्र भूषण कुमार[1]

https://doi.org/10.5281/zenodo.18088914
Review:19/12/2025 Acceptance: 21/12/2025 Publication:30/12/2025

सारांश: सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) ने आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली एवं गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रस्तुत अध्ययन में बी.एड. महाविद्यालयों के संदर्भ में शिक्षक-प्रशिक्षण में आईसीटी की भूमिका एवं महत्त्व का विश्लेषण किया गया है। वर्तमान डिजिटल युग में आईसीटी पाठ्यक्रम निर्माण, कक्षा-शिक्षण, अधिगम संसाधनों, मूल्यांकन प्रक्रिया तथा शिक्षक एवं प्रशिक्षु-शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट कक्षा, मोबाइल एप्लिकेशन तथा ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से सूचना की सुलभता बढ़ी है तथा स्व-अधिगम, अंतःक्रियात्मक एवं शिक्षार्थी-केन्द्रित शिक्षण को प्रोत्साहन मिला है। आईसीटी समय एवं स्थान की बाधाओं को कम करते हुए सतत प्रतिपुष्टि, सहयोगात्मक अधिगम तथा समस्या-समाधान कौशल के विकास में सहायक सिद्ध होती है। अध्ययन में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में तकनीकी एकीकरण पर बल देने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों एवं आयोगों की अनुशंसाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बी.एड. महाविद्यालयों में आईसीटी का प्रभावी एवं व्यवस्थित उपयोग शिक्षक-शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने तथा भावी शिक्षकों को तकनीक-सक्षम, सृजनात्मक एवं समकालीन शैक्षिक चुनौतियों के लिए तैयार करने में अत्यंत आवश्यक है।

कुंजी शब्द (Keywords): सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), शिक्षक शिक्षा, बी.एड. महाविद्यालय, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, ई-लर्निंग, डिजिटल शिक्षा, स्व-अधिगम

प्रस्तावना- आधुनिक समय मे सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी सूचना क्रांति के रूप मे मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे समावेश कर चुका हूँ। यह कि शिक्षण प्रक्रिया के सभी स्तरों एंव पक्षों को प्रभावित कर रहा है। प्रशिक्षण, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, कार्यक्रम निर्माण योजना, मुल्यांकन बहुभषिकता आदि प्रक्रिया में इसकी स्पष्ट असर आज देखने को मिलती है। इस तकनीकी का संबंध वैज्ञानिक तकनीकी के उन सभी साधनो से है जिनके माध्यम से त्वरित गति से सूचनाओं का उचित आदान-प्रदान संभव होता है। किसी तथ्य की सूचना को जानना एंव उसे उसी रूप मे हस्तांतरित करना ही सूचना एंव संचार प्रोद्योगिकी है पीटर महोदय ने 2014 में कहा था कि ''सूचना'' कौशल तथा अभिवृति प्रदान करने की एक नवीन तथा उभरती हूई विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली एक शैक्षिण प्रक्रिया है। जिसमे समस्या और स्थान के आयामों का शिक्षण एंव अधिगम में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है। यह एक ऐसा वृहत क्षेत्र है जो माध्यमों की संचालन की याग्यता सहित संचार कि विभिन्न माध्यमों जैसे रेडियो, मोबाईल, फोन, टेलिविजन, कम्प्युटर, हार्डवेयर, और सॉफ्टवेयर तथा इंटरनेट की सेवाओं और उनके प्रयोग

[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, ज्ञान प्रकाश कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, चिरैली, गया, बिहार, भारत

द्वारा सूचना के प्रसरण में भी सहायक है। वर्तमान समय में संचार की बहुत ही आवश्यकता है। निश्चित तौर पर सूचना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। शिक्षा के क्षेत्र में उस तकनीकी की महत्वपुर्ण भूमिका रही है। बी0एड0 प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षुओं को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इस तकनीकी के माध्यम से प्रशिक्षु एंव अध्यापक दोनों ही सूचनाओं को एकत्र करने के विभिन्न स्त्रोतों से भंडारित करने के विभिन्न माध्यमों तथा संप्रेषित करने की विभिन्न तकनीकों से जानकारी प्राप्त करने में समर्थ होगें। अध्यापक इन तकनीकों का अपने शिक्षण कार्य में प्रयोग कर उसे प्रभावी बनाने के लिए महत्वपुर्ण सूचनाओं का संग्रहित कर सकता है। यह प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षुओं की सूचनात्मक एंव सृजनात्मक चिंतन की क्षमताओं को विकसित करने में भी सहायक है। वर्तमान समय के तकनीकी संचालित डिजिटल जूग में शिक्षा परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। जिसमें प्रशिक्षुओं को उच्च स्तर पर पारंपारिक दृष्टिकोण आधारित अधिगम के जगह पर स्वंय नियंत्रित और अधिक लचीले प्रारूप की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। सीखना सिर्फ कक्षा 10 तक ही सीमित नहीं रहा है। अध्यापक और प्रशिक्षु दोनों ही आ0ई0सी0टी0 के माध्यम से स्वंय अधिगम करते हुए अपनी कई प्रकार की समस्याओं का समाधान कर सकते है। यशपाल समित की रिपोर्ट (1993) ''शिक्षा बिना बोझ के'' में कहा गया है कि इन शिक्षक-शिक्षक कार्यकर्मों में इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए की प्रशिक्षुओं में स्वंय अधिगम और स्वतंत्र चिंतन का विकास हो सके। (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचार्य की रूपरेखा के अनुसार शिक्षा कार्यक्रमों की पहल को बढ़ाने में व्यवस्था के संबंध में और शिक्षा संबंधी विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने में तकनीकी का विशेषपूर्ण उपयोग सराहनीय हो सकता है। ई-लर्निंग अर्थात् सीखना के रूप में प्रशिक्षु अलग-अलग तकनीकी साधनों के समुह का प्रयोग कर अपने अधिगम के स्तर का विस्तार करते हुए उसे अधिक प्रभावी बनाता है। यह तकनीकी ज्ञान प्रशिक्षु और अध्यापकों को शिक्षण परिसर के भीतर और बाहर, कभी भी एंव कहीं भी अपनी सुविधानुसार अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित करती है। वर्तमान समय में संचार प्रौद्योगिकी बहुत ही प्रचारित प्रौद्योगिकी है जो शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवीन क्रांति लकर उभरी है। अध्यापक प्रशिक्षु के अधिगम के क्षेत्र में इस तकनीकी के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है। इस तकनीकी के माध्यम से प्रत्येक बी0एड0 प्रशिक्षण महाविद्यालय में स्मार्ट क्लाश, स्मार्ट फोन और वाइ-फाई उपकरणों के व्यापक उपयोग ने पारंपारिक शिक्षण-प्रशिक्षण, विधि तथा अधिगम प्रक्रिया में काफी परिवर्तन देखने को मिलता है। इस प्रौद्योगिकी की सुविधा के कारण कई सारी शिक्षण-प्रशिक्षण ऐप्लीकेशन प्रशिक्षुओं को स्वंय अधिगम करते हुए अपनी विषय संबंधी अशुद्वियों एंव समस्याओं को दुर करने के लिए प्रेरित कर रहा है जो इंटरनेट ब्राउजर की सहायता से निःशुल्क एंव शुल्क का भुगतान कर स्मार्ट फोन पर आसानी से उपलब्ध हो जाती है। हुसैन और क्रोंजे (2010) में कहा है कि सुवाहयता (कही भी ले जाना) एंव अभियम्तया (पहुँच) भाषा शिक्षण और अधिगम की वृद्वि में प्रमुख निभाती है। बदलते समय के अनुसार मानव संसाधन विकास मंत्रालय

भारत सरकार ने विभिन्न विषयों के ज्ञान एंव अधिगम के लिए स्वंय आँनलाईन प्लेटफार्म की व्यवस्था की है। इसी प्रकार विभिन्न राज्यों में प्रारंभिक से लेकर स्नातक स्तर के प्रशिक्षण महाविद्यालय में इस तकनीकी की माध्यम से शिक्षण प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ताकि अध्ययन-अध्यापन करने वाले अध्यापक एंव प्रशिक्षुओं को विषय ज्ञान के साथ-साथ नई-नई प्रशिक्षण तकनीकाओं का ज्ञान लेकर कक्षा-कक्षा में इसका विकास उचित प्रयोग कर शिक्षार्थीयों का स्वर्णगीण के दौरान अधिगम की निम्न विशेषताएँ हैं-

१. इंटरनेट के माध्यम से स्मार्टक्लास द्वारा आँनलाइन अधिगम प्रशिक्षुओं को आसानी से पहुँच जाता है।
२. इस तकनीकी के माध्यम से प्रशिक्षुओं एंव अध्यापकों को तुरंत प्रतिपुष्टि प्राप्त होने की पूर्ण संभावना होती है। जो अध्यापक एंव प्रशिक्षुओं के अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ाने में सहायक है।
३. इसके माध्यम से प्रशिक्षुओं को समस्यात्मक पाठो का पुनः दोहराव कर अपने विषय संबंधी ज्ञान में प्रवीणता प्राप्त करने तक प्रयोग कर सकता है।

इस तकनीकी के माध्यम से उपलब्ध एप्लिकेशन साँफ्टवेयर आर्थिक रूप से किफायती साधन है। जो किसी भी समय तथा कही पर भी आवश्यकता महसुस होने पर इसका प्रयोग किया जा सकता है। निष्कर्षः-इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि इस आधुनिक अध्यापको एंव प्रशिक्षुओं को स्वअधिगम आधारित अध्ययन के लिए प्रोत्साहन करते हुए उनके शिक्षण-प्रशिक्षण में सुधार लाते हुए कक्ष-कक्षा में दिये जाने वाले शिक्षण प्रशिक्षण की प्रक्रिया में सुधार कर नित नये-नये ज्ञान से विद्यार्थीयों को अवगत कराना है। ताकि वे अपनी समस्याओं को स्वंय इस तकनीकी के माध्यम से समाधान निकाल सकें।

संदर्भः

1. कुकुल्सकाहमे ए, 2009 ''बिल मोबाईल लर्निग चेंज लैग्वेज लर्निग'' 21 (02), 2019 को http:11www.researchgate.net/publication/4279 से लिया गया।
2. एप्लाईड इंजिनियरिंग रिसर्च 12 (21) 24 सितम्बर 2019 http:11wwww.ripublication.com से भारत सरकार 1990 ''रिपोर्ट आॅफ द कमेटी फाँर रिव्यू नेशनल पाॅलिसी एजुकेशन- 1986 (आचार्य राममूर्ति समीक्षा समिति, 1990)'' नई दिल्ली।